

8:3

सतत ढीलन :- इसी ढीलने तब उत्पन्न होती है जब पिटवा लोहा, मृदु इत्याद, तांबा तथा ऐल्युमीनियम जैसे तन्म पदार्थों का अनुक्रम दशाओं के अन्तर्गत मशीनब किया जाता है। ढीलन व आजार के अन्तराफलक पर होने वाले व्यर्षण का आजार फलक पर उपयुक्त पॉलिश करने और पयाप्त मात्रा में शीतलक का प्रयोग करने कम किया जा सकता है। हीक इमजाले का प्रयोग मले से भी उन्त व्यर्षण कम हो जाता है संक्षेप में, सतत ढीलन भी उत्पन्न का मुख्य आचार आजार के आगे वाली धातु का वस्तु विरूपण होना है अतः मशीन के दौरान तन्म पदार्थों का सतत प्लास्टिक विरूपण होने में फलस्वरूप अपेक्षाकृत अधिक लम्बी सतत ढीलन, आजार के फलक के सहारे अपर की ओर अग्रसर होती है।

प्रेस डारि :- प्रेस पर सामान्यतः प्रयोग किया जाने वाले आजार फल तथा डारि होते हैं पंच तथा डारि दोनों ही भाग एक इकाई के रूप में कार्य करते हैं। इन दोनों ही भागों की संयुक्त इकाई को डारि समुच्चय कहा जाता है। डारि समुच्चय का नर भाग जी प्रेस के चक्र से जुड़ा रहता है, पंच कहलाता है। डारि इसे संयुक्त इकाई का मादा भाग होता है जिसे सामान्यतः प्रेस के सतत पर दृष्टापूर्वक जकड़ा जाता है। डारि में एक चक्र होता है जो पंच के साथ पूर्ण संरक्षण में होता है।